

पुगम

दुर्गा शारदीय

पूजा पद्धति



दुर्गा-शारदीया पूजा-पद्धतिः

आसन शुद्धि

गजपत्नी को चाहिए कि स्नान कर शुद्ध कपण धारण करके आसन की आदेशानुसार पूर्वोक्त गैर या उत्तरीयक मुख करके आसन पर बैठे । तब आसन की नीचे पूर्वोक्त भाग में त्रिकोण उपरस बनाकर विष्णोविक्रम मंत्र द्वारा गन्ध, पुष्पादि से पूजन करें—

ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः । ॐ कुमारी नमः । ॐ अनन्ताय नमः । ॐ पृथिवी नमः । पूजनोपरान्त त्रिकोण को नीचे त्रिको मंत्र द्वारा स्पर्श करें—

भूमि स्पर्श

ॐ पृथिवी त्वया भूता लोका देवि त्वं विष्णुना भूता ।
त्वं च धारय कां देवि पवित्रं कुरु वासनम् ॥

आचमन विधि

पुण्य कार्य की आरम्भ में आचमन अवश्य करना चाहिए । आचमन के अथवा जल का जल से स्पर्श उदा ओम् नमो का शक्ति नहीं होना चाहिए । प्रथम आचमन से आध्यात्मिक, दूसरे से आधिभौतिक और तीसरे से आधिदैविक शक्ति होती है । इसलिए तीन बार आचमन करें—

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ वासुदेवाय नमः । तत्पश्चात् ॐ ह्रीं केशवाय नमः ।

बोलकर दूसरे बार के जल से हाथ की शुद्धि करें ।

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

ଶ୍ରୀ ମହାଶୟ ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବାନଃ

संयोजक: श्री. अशोक क. शिंदे

© 2004 Blackwell Publishing Ltd *Journal of Internal Medicine* 255: 255–262

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

2004-2005

महाराष्ट्र राज्य सरकार, नवी मुंबई, महाराष्ट्र

de l'art de la guerre, et de la science de la guerre.

g. *polyoxydized* + *polymer* = *polymerized* *polymer*

and the other two are the same as in the first case.

ward work feed after conversion

...and the fact that the ...

... it was the same day after all, wasn't it?

...and the ...

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

[illegible]

विष्टववेष्टा । स्थितिवन्तास्यो अविष्टनोमि । ग्याप्त नो
 वृद्धस्पतिर्दधानु ॥ ११ ॥ ॐ पुष्यदावा मस्तः पुष्टिमातरः शुभं
 यावानो विष्टेयु जप्स्यः । अग्निजिह्वा मनसः सुचक्षुषो
 विष्टे नो देवा अथमापमन्त्रिह ॥ १२ ॥ भद्रं कर्णेभिः
 शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिराजराः । विश्वेभ्यो ब्रह्मवाक्
 समन्तभिर्यज्ञेभिरि देवाभिर्य यदापुः ॥ १३ ॥ शतमिन्नु शतदो
 अन्ति देवा यत्र नक्षत्रका नामन्तनूनाम् । पुत्रासो यत्र
 पित्रो भयन्ति सा नो मध्या रीतितायुर्गन्तोः ॥ १४ ॥
 अदितिर्होरीतिरान्नरिहमदितिर्माता तद पिता स पुत्रः ।
 विष्टवेष्टा अदितिः पृथुः कवा अदितिर्ब्रह्मदितिर्ज-
 नित्वम् ॥ १५ ॥ दौषीयुवाध बन्धव वधेमे सुप्रजा त्वाय
 सहसा । अथो जीव शतदः शतम् ॥ १६ ॥ ॐ श्री
 शान्तिशान्तिशान्तिः शान्तिः पुष्टिमी शान्तिरायः शान्तिरीश्वर्य
 शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विष्टवेष्टाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
 सव्यैः शान्तिः शान्तिर्वैश्व शान्तिः सा सा शान्तिरीधि ।
 शान्तिर्भैरव ॐ शान्तिः सुहृन्ति सव्यैर्विष्टशान्तिर्भैरव ॥ १७ ॥

बौद्धशैल्यन्तः पुरा (अनुमानम्)

आशाहनामने पाण्डुमर्षीमाश्रमनोपक्रमम् ।
 ज्ञानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमास्त्यादिभिः कृपात् ॥
 धूपं तैलं च नैवेद्यं नमस्कारं पृथक्शिराम् ।
 उद्गासनं बौद्धशकमेवं देवायैने विधिः ॥

गणपतिपूजनम्

प्रथम कलशार्चनं कालं च पुष्पं, अक्षतं, तुल्यं, वैष्णवं, पुष्पैश्चैव पूज्यं ।
तत्रैव कलशं स्थापयित्वा ।

मन्त्रेण—ॐ तत्सन् आश्विने मासे शुक्लपक्षे अमुकतिथौ
अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नो अहं अमुकशर्मा (तथा
प्रसादं गृह्यते) श्रीभगवतो दुर्गापूजितकामस्य कर्ता त्वं
आर्थिक-शास्त्रकारत्वेन श्रीभगवतो दुर्गा निर्विघ्नशान्ति-
सिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं अहं करिष्ये ।

श्रीगणेशाय नमः । हुं धूर्ति हो ते केवल पुण्य छोड़ देते । यदि शूल
की हुं न हो तो दुर्गाकाल के अथवा दोसरे त्येद वार सावले के रूप
स्थापित करें । (बहुत जगह गोबर और चिट्ठी को गोले-गणेश बनाने का
है) दाहिने हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर लीके लिखें अथवा दूध आभरण
करके गणेश जी का स्नान कराते हुए धूर्ति को कथन अक्षत छोड़ दें ।

ध्यातव्यं—भक्ताननं भूतगणादिभ्योविहं, कपिलं त्र्यम्बकं सारुभङ्गम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर-पादपंकजम् ॥

मौनोक्त्यं—आगच्छ भगवन्देव म्माने साव स्मिमी धन ।
सावन्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधी धन ॥

प्रतिष्ठा—अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः ज्ञान्तु स ।
अस्यै देवत्वमस्मांसि मायिहेति स काचन ॥

आसनं—रघ्यं सुशोचनं दिव्यं सर्वसीम्नकरं शुभम् ।
आसनञ्च भया दत्तं गृह्णान् पादोत्तर ॥

- ॥१॥ इच्छादिभक्तं निर्धनं च सर्वसौख्यसंग्रहम् ।
 पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॥२॥ अर्घ्यं गृह्यता देवेभ्यः सखा-पुत्राभ्युक्तैः सह ।
 कठणं कुरु मे देव गृह्यतामर्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥
- ॥३॥ आचमनं- सर्वसौख्यं समायुक्तं सुखीभ्यः निर्धनं जलम् ।
 आचम्यतां यथा दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥
- ॥४॥ मधुपानं- कर्ण्ये कर्ण्येन विहितो दधिपानाभ्यसंग्रहः ।
 मधुपकौ मधुनीतः पूजायै प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॥५॥ आचमनं- सर्वसौख्यं समायुक्तं सुखीभ्यः निर्धनं जलम् ।
 आचम्यतां यथा दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥
- ॥६॥ नंगा सरस्वतीं विद्यां समोक्त्या सर्वज्ञाजने ।
 स्नायितोऽपि यथा देव तथा ज्ञानि कुरुष्व मे ॥
- ॥७॥ वस्त्रं- सर्वभूषाधिके मौक्त्ये लोकात्मजाविद्यारणे ।
 यमोपपादिते तुभ्यं कायसी प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॥८॥ वस्त्रं- श्रीमद्भद्रचन्दनं दिव्यं गन्धार्घ्यं सुमनीहाम् ।
 विलेपनं भुरगेषु चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॥९॥ माला- कुंकुमं कायना दिव्यं कायना कायसम्भावम् ।
 कुंकुमेनाविहितो देव गृह्यता परमेश्वर ॥
- ॥१०॥ पुष्पा- पुष्पीनां विविधैर्दिलोः कुम्भोदोक्तं सयकैः ।
 पूजायै नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥
- ॥११॥ पुष्पमाला- मालातीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
 यधानीनानि पुष्पाणि गृह्यता परमेश्वर ॥

कलश-स्थापनम्

कलश-स्थापनं कं स्थाने ये दृष्ट्वा कं पीतं स्थानं ते अक्षयम् ।
कलशं बनाकर उस पर कलश स्थापित करने चाहिए ।

भूमिस्थलं- विष्वाक्षामि धात्री शेषनामोपरि स्थिता ।

मृता चादिवराहेण सर्वकामफलप्रदा ॥

कलशस्थलं- हंसकपादि सम्भूतं तास्यैव मृदुनं नक्षत्रम् ।

कलशं पीतकल्पायं छिद्रवर्णविवर्जितम् ॥

कलश में जल- जीवनं सर्वलोकाणां पावनं पावननात्मकम् ।

जीवं सर्वलोकाणां च तज्जलं भूषणम्यहम् ॥

मृदु नक्षत्रं- मृदुं कार्यासम्भूतं ज्ञापयति निर्मितं पुरा ।

येन चन्द्रो जगत्सर्वं वेष्टनं कलशस्थं च ॥

क=अभिधि- ओषधिः सर्वभूषणं तुषणाम्यलतास्तथा ।

दूर्वासर्वपापयुक्ता सर्वोषधः पुनान् यम् ॥

क=पुष्प- विशिष्टपुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्धनम् ।

क्षिप्तं यत्कार्यसम्भूतं कलशे निक्षिपाम्यहम् ॥

क=पञ्च-फल- भक्षण्योदुम्बराप्लवङ्गयक्षोपपल्लवास्तथा ।

पञ्च ते पल्लवाः प्रीक्ताः कलशे निक्षिपाम्यहम् ॥

पंचरत्न- कनकं कुन्तिशं पीतं पञ्चरागं च धौविककम् ।

एतानि पञ्जरत्नानि कलशे निक्षिपाम्यहम् ॥

पुष्पफल- पुष्पीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापशोधनम् ।

पुत्रसौख्यादिफलदं कलशे निक्षिपाम्यहम् ॥

हिरण्यगर्भनर्घस्य हयवीजं विभातसं
अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्

सप्तपुत्रिका - अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्दन्तमौक्तिकंगमात् इत्यादि
तान्द्रागन्ध गोरोप्याद् मृदमानीय निक्षिपेत्

पूर्णाक्ष - विधानं सर्ववस्तुनां सर्वकार्याधाराद्यनम्
पूर्णास्तु कलशं येन पात्रं तत्कलशोपयि

गोविन्दं मे लाल कम्प लयेत् कलः पूर्णपात्रं परं रक्षेत् ।

श्रीपञ्च - श्रीश्या ते लक्ष्मीश्वर्य पत्न्यावहोरात्रे पात्रेनैव नक्षत्राणि
सप्तमश्विनी व्यासम् । इत्यादिवाणाम् म इवाण । सर्वलोकं
इवाण ।

वसुध आवाहन - अस्मिन् कलशे वरुणं त्वाङ्गं सपरिवारं
सामुख्यं सशक्तिक्रमावाहयामि । ॐ धूम्रं स्वः भो वरुण
इहागच्छ इह तिष्ठ । स्वापयामि पूजयामि ।

वैष्णववाहन - सर्वे सपुत्राः सवेतस्तीर्थाणि जलदा नदाः ।
भाषान्ते देवपुत्रार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥
कामशम्य मुने विष्णुः कण्ठे रुद्रः समभिमतः ।
मूले तस्य शिवो ब्रह्मा मध्ये मातृगणः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
श्रावणेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो हयवर्षणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समभिमतः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु मयः शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

पञ्चकता को वाहिए कि कलहोपपन्न आचारिण देवताओं को
पवित्राचार से पौनःपुन्यसे पूजा करें ।

प्रार्थना-देवदानव-संघादे पश्यमाने महादयी ।

उन्मन्त्रोऽसि यदा कुम्भः । विघ्नतो विघ्नानां स्वयम् ॥

त्वन्तोये सर्वतोर्ध्वानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।

त्वयि तिष्ठन्ति यतानि शर्या प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥

शिवः स्वयं त्वमेकाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।

आदित्यो वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सप्तैतृकाः ॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कथमकलप्रदाः ।

त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जगन्नाथ ॥

स्तान्निध्यां कुरु मे देव प्रमन्त्रो भव सर्वदा ।

प्रमन्त्रो भव । वरतो भव । भवतः पूजया वरुणाद्यामाहितदेवताः

प्रीयन्तां न मम ॥

नवग्रहपूजनम्

हमारे लोगों में कहीं बहुतका पूजा की जाती है । कहीं पर नव कोश
बन कर धरत में सूर्य की पूजा करें, सूर्य के चारों ओर भद्र में पद्माल
(सूर्य व पद्माल लाल), अग्निशक्ति में मन्दार (श्वेत), ईशान कोश
में बुध (हर), उता में गुरु (पीर), शनि में शुक्र (हर), सूर्य के
परिचय में शनि (काला), वैष्णव कोश में शनि (काला), भास्वर कोश
में शनि (काला), शनि के अनुशर कहीं का निर्माण करने छोटी लवा भजना
गायें । जहाँ कहीं न कहीं की भी पञ्चकता को वाहिए कि कलहोपपन्न
आचारिण देवताओं को पवित्राचार से पौनःपुन्यसे पूजा करें । आप्तार्थ
निम्नोक्त ग्रन्थ पढ़ते रहें—

१. ३० अक्षरान्वय नमः २. ४ चन्द्राय नमः
 ३. ५ धन्याय नमः ४. ६ ब्रह्माय नमः
 ५. ७ सूर्याय नमः ६. ८ शक्राय नमः
 ७. ९ अग्निदेवाय नमः ८. १० कर्तव्ये नमः
 ९. ११ शिवे नमः १०. १२ पञ्चांगार्ये नमः पूजा के

१३

सर्वेषां भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥ १ ॥
 सर्वेषां भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥ २ ॥

पञ्चमूर्तिपूजापत्रम् ।

- ॥ १ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ २ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ३ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ४ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ५ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ६ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ७ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ८ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ ९ ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥
 ॥ १० ॥ भगवन्महोपाध्यायै नमः ॥

दृष्टान्तवत्प्रमाणजन्य

444 24

[illegible]

81 79 11

धनदा पुत्राया दत्तः प्रथमपुत्रः पुता पुंयिनाम् ।

[illegible]

अध्यायः

अथ साध्याय

३० गी हविषांते परितन्वा हवि हस्त दन्वा ३१ आ ह्रीं
 क्लीं यं रं लं वं जं षं मं हं ह्रस्वं मयं उभयां इह
 प्रमाण ३२ आ० मयं ज्ञेयं इह स्थितं पुन ३३ आ०
 मयं इन्द्रियगणि पुन ३४ मयं वाह मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणा
 प्रमाण इहामन्य मयं ज्ञि विष्टन् श्रुताः ।

आचार्यगण गणेश जी कृत १९६०-६१

अथ कान्यास

ॐ अ कं खं गं घं ङं आ अंगुलीया नमः ।
 ॐ इ च छं ज झ ञं इ तर्जनीया नमः । ॐ
 ट ठ ड ढ णं मध्यमाया नमः । ॐ ए, तं धं द
 धं नं ऐ अनामिकाया नमः । ॐ औ पं फं, बं य
 यं औ कनिष्ठिकाया नमः ॐ अ य, रं लं वं श
 शं सं हं न स अ कर्णलकापुष्पायाम् अथा
 फट् ।

अथ अङ्गन्यास

ॐ अ कं खं गं घं ङं आ हृदयाय नमः । ॐ
 इ च छं, ज झ ञं इ शिरो मूलाय । ॐ उ टं न
 हं ङं वां कं शिखायै कण्ठे । ॐ एं तं धं दं य
 यं णं कनकाय हृत् । ॐ औ पं फं बं यं यं औ
 नेत्रत्रयाय बीजट् । ॐ अ यं रं लं वं शं यं शं हं
 शं अ कर्णलकापुष्पायाम् अथाय फट् । ॐ नमः वा
 न् ।

अथ मातृकान्यास

आथां बं नमः । लं नमः । डं नमः । स्रं नमः । लिङ्गं
 वं नमः । धं नमः । यं नमः । रं नमः । रं नमः । रं नमः । रं नमः ।
 वायी डं नमः । डं नमः । वां नमः । तं नमः । धं नमः
 रं नमः । धं नमः । रं नमः । रं नमः । रं नमः । रं नमः । रं नमः ।

[illegible]

भय घातक न्यास

॥ अथ शिवपूजायाः प्रारम्भः ॥ आ नमो भगवते वासुदेवाय । १ ॥
नमः । ३० गङ्गायै नमः । २० यमुनायै नमः । ३० विशालायै
नमः । ३० ब्रह्मायै नमः । ३० सूर्यायै नमः । ३० विष्णवे नमः

१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

अथ श्रावणं नाम

॥

अथ अष्टश्रावणम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः ।
 ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः । ॐ नमः ।

मदस्य कलात्मनं चंद्रमण्डलाय नमः ।
 अथादृशकलात्मनं सूर्यमण्डलाय नमः । इति शंखचक्र
 कलात्मनं चंद्रमण्डलाय नमः ।

पवित्रं च पञ्चाङ्गं मया गृह्यते । तत्र द्वायं मया पृथक् पृथक् ।
 १०८

पुष्पमाला

तव पुष्पमालायां विद्यमाना विधुतः करः ।
 विधितः मया देवैः पादुकाय नमः ।

दुर्गा भक्तानाम्

ॐ गौरी चण्डिका कृष्णमृत्या सूर्यमण्डला लीलायां
 दुर्गे इति नाम्ना विदुः । अत्राधिपत्या कृतं मया पुज्यं गृह्यते
 इति स्वहृदयं यत्ना तत्राकारं हृदिनि तज्जनाभ्यां अचरणं
 वीर्यमिति गात्रिकीमृदा पदपद्मं वीर्यमिति तज्जनाभ्यां वीर्यं ॐ
 श्री श्री जय दुर्गाय नमः । इति भक्त्या सकलैकतया ॐ
 श्री दुर्गे हृदयाय नमः ॐ दुर्गे शिवाय स्वाहा । ॐ दुर्गाय
 शिवाय स्वाहा ॐ भूतनाशिनी केशवाय हुम् ॐ
 दुर्गे दुर्गे रक्षिणी नेत्रत्रयाय वीर्यम् । ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणी
 अस्त्राय फट् । इति पदपद्मं विन्यस्य दुर्गारूपजलं ध्यात्वा
 तत्र गन्धपुष्पाभ्यां दुर्गां यज्ज्वह ।

मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम्
 वाचनं पुण्यमश्नुते पञ्चभुजाध्यात्मम्

अथोपायः साधनम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्
 गच्छत्यत्रैवैवम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्

आयनादयः आयः पादुमाधमन तन्म
 मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम् ॥
 गच्छत्यत्रैवैवम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम् ॥
 आयनादयः आयः पादुमाधमन तन्म
 मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम् ॥
 आयनादयः आयः पादुमाधमन तन्म
 मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम् ॥

अथोपायः साधनम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्
 गच्छत्यत्रैवैवम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्
 आयनादयः आयः पादुमाधमन तन्म
 मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम्

अथ धर्मात्मा पूजनम्

अथ धर्मात्मा पूजनम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्
 गच्छत्यत्रैवैवम् इत्यत्र तन्म निर्वर्तितम्
 आयनादयः आयः पादुमाधमन तन्म
 मानसंवादनं चैव धर्मात्मा चैव निर्वर्तितम्

[illegible]

31:47-48

4 41 4

• 11 •

41

1

1

.91

सौ सगुणो जी॥

[illegible]

525

1987

भारतमात्रेण सर्वत्र विद्यमानं सर्वत्र विद्यमानं
सर्वत्र विद्यमानं सर्वत्र विद्यमानं सर्वत्र विद्यमानं

प्रा.सं. ५. १८. ८. १२. १५. १८. २१. २४. २७. ३०. ३३. ३६.

धुनेश्वरी नथ १८७४ ४२ २३ ३३३ ३३३ ३३३

आचार्य जी के इस शब्दार्थः—

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

३० धना इति विज्ञात्वा ज्ञेयं ज्ञानं यत्नम्
ते गृह्यान् यमं दत्वा जतिंश्च प्रमाथिनः ॥

[illegible]

५३१०५४१२

५७३ ३३० अतश्चैतन्निष्पद्यते रजसात्म्या ब्रह्मस्मिन्नस्य ।
नानात्वेकरात्म्यकत्वात् । अतश्चैतन्निष्पद्यते । ॥

३. विज्ञानसूक्तानां मन्त्र - इह जन्तुः संश्रयः प्रकीर्णकारः ॥ पृ. ३५

[illegible]

मन्त्रार्चनम्

गणनात दिलेल्या पुस्तक संख्या व पत्रावली ही पुस्तक प्रतिलिपिदार ही संख्या व पत्रावली नकार गणनात करी

547-24

३० मन्त्रद्वारां द्वापरां विन्दुपृष्ठा करीवर्षाया

१३३३ ३ २२२ २-११५६६ ४८५५ ॥

५. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः
 ६. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः
 ७. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः
 ८. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः
 ९. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः
 १०. 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः 'अस्य' इति शब्दः

३५. अथ चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
 ३६. अथ अष्टाविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
 ३७. अथ अष्टाविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
 ३८. अथ अष्टाविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
 ३९. अथ अष्टाविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥
 ४०. अथ अष्टाविंशदधिकशततमोऽध्यायः ॥

त्रायत्य वरुणं तं नमः शंकराय १

॥ ३० ॥ दृष्ट्वा ह्यनमसापुनः सितवदक्षं तथान्तम
शायनं शङ्कुराजस्य गृहणाख्यं दरांश्वर ॥

॥ ३१ ॥ मधुपकं पञ्चरात्रं कृष्णं पारुक्त्वाप्यत
मया विवर्तितं धक्या गृहणा परमश्वरि ॥

॥ ३२ ॥ अचम्यता स्वयां तं च धक्यं च अचम्यता कुरु
दुग्धतं च वरुणं तं पण्डितं च पण्डितं गतेय ॥

॥ ३३ ॥ शङ्कुराजस्यमानं शङ्कुराजस्यमानं
प्रापयामि मधुपकं त्वं पञ्चरात्रं पण्डितम् ॥

॥ ३४ ॥ स्वयं च शङ्कुराजस्य अचम्यताप्यत
मया विवर्तितं धक्या गृहणा परमश्वरि ॥

॥ ३५ ॥ पञ्चरात्रं पण्डितं शङ्कुराजस्यमानं
तं च शङ्कुराजस्यमानं कल्पयाम्यनंत्यकम् ॥

॥ ३६ ॥ शङ्कुराजस्यमानं पण्डितं पण्डितं
गृहणा परम मया कुरुया परमश्वरि ॥

॥ ३७ ॥ शङ्कुराजस्यमानं पण्डितं पण्डितं
कुरुया परम मया कुरुया परमश्वरि ॥

॥ ३८ ॥ शङ्कुराजस्यमानं पण्डितं पण्डितं
कुरुया परम मया कुरुया परमश्वरि ॥

॥ ३९ ॥ शङ्कुराजस्यमानं पण्डितं पण्डितं
कुरुया परम मया कुरुया परमश्वरि ॥

॥ ४० ॥ शङ्कुराजस्यमानं पण्डितं पण्डितं
कुरुया परम मया कुरुया परमश्वरि ॥

ततः त्रीं पृथक्कर्तव्यं सत्यकामादीनामनुय ॥

आदित्येनैव शिखरेण पश्चाद्वर्षिणः यदा
विश्वस्यैव पृथक्कर्तव्यं पश्चिमे तं पश्चिमं ॥

पश्चिमं पश्चिमवर्षिणः पश्चिमेण पश्चिमवर्षिणः
कदापि ततः शिखरेण गुह्येण पश्चिमवर्षिणः

एतत्तु त्वं विद्वत्

अतः तस्मिन्नातो ह्येतत्तु पश्चिमं पश्चिमवर्षिणः

कदापि ततः शिखरेण गुह्येण पश्चिमवर्षिणः

॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भो गवता बोर

आम अरि

ॐ गृहमणि पथो युक्त नाना सधर्ममयम्
यथा निवेदित सकला पायस प्रतिगुह्यताम्

पश्चात्

ॐ अमृत उचित दिव्य आनासपममन्वितम्
विष्टिकं विविध देवि गृह्यता मम सावत

काल

ॐ लघुदुक सादृक दिव्य आनासपममन्वितम्
सुमिष्ट परम देवि तदेतन् प्रतिगुह्यताम्

३५ लघुमन्त्रम् ३५ मन्त्रमन्त्रम्

ताम्रपुन

एषा सर्वत कस्तूरी कर्पूरी पूष्यवर्णसितम्
वर्णिकं पुष्पकासाधोमपवर्णम् सुरेश्वरि ॥

सिन्दूर

ॐ पवित्रीयापञ्चनकं सुगन्धं सुर्पसर्जितम्
यथा निवेदित सकला सिन्दूर प्रतिगुह्यताम् ॥

॥ ॥ अतस्तु सन्तानागस्तु कर्पूरी कर्पूरी रोषणं भद्रा ;

कस्तूरीति सुगन्धं यथा यथा चित्तपथम् ॥

एषा ॥ ॥ ॐ अणिहकरी विष्टिकं अगवन्ती धीमहि तनो

देवि एष्टान्तात

मीधाय इत्यम्

मीधाय संसृष्टं नित्यं मीधाय सुखवर्द्धनम् ।

मीधाय संसृष्टं देहि देहि नमः शंकरायिणे

इत्यम् सन्तानागस्तु कर्पूरी कर्पूरी रोषणं भद्रा ॥ ॥

२७ पुत्रायार्थनवद्वयं नक्षत्रं चरितकृतं प
विन्तशशाखा धर्माक्षिन्व पक्षिभ्यः प्रयत्न म
भागच्छ चरितकृत इति मन्त्रकन्याश्रितम्
पुत्रा पुत्राणि भूमिन् नक्षत्रं शक्राश्रितम् ।

[illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३५ आपसीन पक्षान्तरं पञ्च पञ्च तस्मान्न च
बाह्यपञ्च पञ्चान्न तस्य देहि तन्मन्त्रे

१. भगवद्गीता में श्री कृष्ण का कौन सा उक्ति सत्य है ?
हमारी भगवद्गीता की है।

६-३ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

श्री ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
सदाशिवाय नमः ॥

$$- \frac{1}{2} \pi \quad \pi \quad \frac{3}{2} \pi \quad 2 \pi$$

• *Trillium* sp. 100%

[illegible][illegible]

॥ १ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
॥ २ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

२-११ १८. अथ अत्रास्य अथ अत्रास्य अथ अत्रास्य
अथ अत्रास्य अथ अत्रास्य अथ अत्रास्य

१५. १. विविक्त विविक्तता विविक्त सत्ता विविक्तता विविक्तता
विविक्त विविक्तता विविक्तता विविक्तता विविक्तता विविक्तता

५. ग. ३०६ आधिक्यस्य विनाशाय सनाथान् यदा धर्म
विधिना कलकामास मुनिस्तु न शक्यते

प्रश्न ३० विद्युत धारा संचालक में प्रवाहित होने पर उसके चारों ओर चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है। यह किस नियम से समझाया जा सकता है?

नमः ॐ ध्यानज्ञानेश्वरं कृतं वाचस्पतिं यमं श्रीं

स्वाध्यासि महादेवे भान् दहि तस्योदितु न ॥

भान् ३० त्वत्प्रिय त्वं धान्यरूपार्थि धार्मिकं धार्मिकार्थि
विद्युत्प्रत्ययान् हि नो भूत्वा गृहे क्लेशप्रदा भव ॥
नदी ॥ ३० स प्रत्य ३०

३० आङ्गो धारती तं धार्यता स धार्यता
मरु गण्डकी पर्वत इवेनगंगा स कौशिकी ॥
सोमवती स धार्यता मरु पर्वतकिनी तया
मरु धार्यता भूत्वा धार्यता धार्यता ॥

३० दुर्गा धार्यता मरु धार्यता कौशिकी ॥
हार्यता तया धार्यता धार्यता धार्यता ॥
भार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥

मरु ३० स प्रत्य

३० धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥
धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥

धार्यता ३० स प्रत्य

धार्यता धार्यता धार्यता धार्यता ॥

स्वर्गं प्राप्तुं वैष्णव्यं स्नानं यत्नं तेन ते

उक्तं कृतं ह्येवम्

३० पवित्रं पवित्रधर्मं तद्विष्णुनिमग्नितम् ।
जीवनं सर्वपापहृत् भुङ्क्ते स्नापयाम्यहम् ॥

उक्तं कृतं ह्येवम्

तस्याहं ज्ञानं श्रुत्वा मुनिभिः समुत्तमम् ।
सर्वपापहृत् वाग्निं भुङ्क्ते स्नापयाम्यहम् ॥

उक्तं कृतं ह्येवम्

गङ्गां सास्वतो रत्नां पद्मं चरितं स्वर्गात्मने ।
स्नापितोऽस्मि मया तृप्तिं तदा ज्ञानं कुरुष्व मे

उक्तं कृतं ह्येवम्

३० कर्पूरात्मकं कर्तुं कर्कशात्मनो तारिण्या ।
शीतलताधिके तृप्तिं मया स्नापयामि ते

उक्तं कृतं ह्येवम्

३० यत्नं त्वं विष्णुं द्वापि धोषं तदा तृप्तिं प्रसादयाम्

उक्तं कृतं ह्येवम्

३० तस्याहं ज्ञानं श्रुत्वा मुनिभिः समुत्तमम् ।
सर्वपापहृत् वाग्निं भुङ्क्ते स्नापयाम्यहम् ॥

दधं म कामधेनुमपत्यन्तं सर्वेषां जीवनं एवम् ।

पावनं यत्नं त्वं यत्नं स्नानं प्रसादयाम्

दधं म यत्नं त्वं यत्नं स्नानं प्रसादयाम्

१.
 २.
 ३.
 ४.
 ५.

१०.
 ११.

१२.
 १३.

...

...

...

...

१४.
 १५.

- १.
- २.
- ३.
- ४.
- ५.
- ६.
- ७.
- ८.
- ९.
- १०.
- ११.
- १२.
- १३.
- १४.
- १५.
- १६.
- १७.
- १८.
- १९.
- २०.
- २१.
- २२.
- २३.
- २४.
- २५.
- २६.
- २७.
- २८.
- २९.
- ३०.
- ३१.
- ३२.
- ३३.
- ३४.
- ३५.
- ३६.
- ३७.
- ३८.
- ३९.
- ४०.
- ४१.
- ४२.
- ४३.
- ४४.
- ४५.
- ४६.
- ४७.
- ४८.
- ४९.
- ५०.
- ५१.
- ५२.
- ५३.
- ५४.
- ५५.
- ५६.
- ५७.
- ५८.
- ५९.
- ६०.
- ६१.
- ६२.
- ६३.
- ६४.
- ६५.
- ६६.
- ६७.
- ६८.
- ६९.
- ७०.
- ७१.
- ७२.
- ७३.
- ७४.
- ७५.
- ७६.
- ७७.
- ७८.
- ७९.
- ८०.
- ८१.
- ८२.
- ८३.
- ८४.
- ८५.
- ८६.
- ८७.
- ८८.
- ८९.
- ९०.
- ९१.
- ९२.
- ९३.
- ९४.
- ९५.
- ९६.
- ९७.
- ९८.
- ९९.
- १००.

...

३ ३० ३० ३० ३० अष्टिकाये नमः

४ ३० ३० ३० ३० चाणक्याये नमः

५ ३० ३० ३० ३० ह्ये पञ्चम्याये नमः ।

६ ३० ३० ३० ३० ह्ये उपलब्ध्याये नमः

७ ३० ३० ३० ३० ह्ये चण्डिकायाये नमः

८ ३० ३० ३० ३० ह्ये लम्प्याये नमः

९ ३० ३० ३० ३० ह्ये ह्ये गङ्गायाये नमः ।

१० ३० ३० ३० ३० ह्ये उद्याये नमः

११ ३० ३० ३० ३० ह्ये घटिकायाये नमः ।

१२ ३० ३० ३० ३० ह्ये नन्दिकायाये नमः ।

१३ ३० ३० ३० ३० ह्ये ह्ये गङ्गायाये नमः ।

१४ ३० ३० ३० ३० ह्ये धारिकायाये नमः ।

१५ ३० ३० ३० ३० ह्ये उद्याये नमः

१६ ३० ३० ३० ३० ह्ये चण्डिकायाये नमः

१७ ३० ३० ३० ३० ह्ये ह्ये नमः

१८ ३० ३० ३० ३० ह्ये शिवायाये नमः

१९ ३० ३० ३० ३० ह्ये शिवायाये नमः

२० ३० ३० ३० ३० ह्ये नन्दिकायाये नमः

२१ ३० ३० ३० ३० ह्ये घटिकायाये नमः

२२ ३० ३० ३० ३० ह्ये गौरीयाये नमः

२३ ३० ३० ३० ३० ह्ये नन्दिकायाये नमः ३० ह्ये शिवायाये नमः

३५ ह्रीं कलायै नमः

३६ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

३७ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

३८ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

३९ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४० कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४१ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४२ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४३ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४४ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४५ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४६ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४७ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४८ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

४९ कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

५० कलायै नमः ह्रीं कलायै नमः

५० मातायै नमः यक्षीं चण्डिकायै नमः
यक्षीं चण्डिकायै नमः यक्षीं चण्डिकायै नमः ॥
नववर्णाय नमः यक्षीं चण्डिकायै नमः
यक्षीं चण्डिकायै नमः यक्षीं चण्डिकायै नमः ॥

यक्षीं चण्डिकायै नमः यक्षीं चण्डिकायै नमः

५. १६ भाष्यभाष्ये प्रमाणान्न संपादयन्त्यादि-उक्त
भाष्ये भाष्यभाष्ये ५५ इति भाष्ये न्यायभाष्यभाष्य
इति १६ भाष्यभाष्ये प्रमाणान्न संपादयन्त्यादि-उक्त

[illegible]

३८ मन्तरशायिचर्चुत्तरे धातुवच समस्तार्थः
 धातुशायिचर्चुत्तरे धातुवच समस्तार्थः ॥

2. ଆମ ସମାଜର ନୀତିର ସ୍ୱରୂପ ଆମ ସମାଜର ନୀତିର ସ୍ୱରୂପ

[illegible][illegible]

2. विषय की #4.7 का छात्रावली में दर्शाया हुआ है।

३० अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३१ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

अंगिकार के बिना

३२ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३३ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३४ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३५ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३६ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३७ अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

अंगिकार के बिना या बाद में कोई भी कार्य नहीं होगा

३.४ प्रहारादव शिवकरीं वाच्यतेव शिष्य मदा ।
उपाध्यायकरी विन्दुकरेण नमो यत्न ते ॥

३०. दार्ष्टिक्याष्टादशैः स्वतन्त्रनिकायैः नष्टं ५० पत्राकरं ।

नाह्या त्वं एषा एतु गच्छांनम्य सम्पत्तं
उमाकायेकुन यथाशक्क सगुण भव

३.० श्रीशंकराचार्यजी गुरुदेवताये नमः एवमकारं

३० हांगुणितकरा यक्ष अणक शाककाणव
दुगुणितकरा धम्मव्यामहाकं मत्ता करु

३५. **मानार्थिण्याः क्षीयणद्वयं नमः** ए० गुला कर

१५ यम्य एषे कस्ये तसि यम्यकस्येतिप्रिये
यम्य यम्यकस्येति प्रिया गृह्याण प्रियाणि य

३६० ध्यायाभ्यासप्रणाली महाभारत में यद्यपि पुस्तक नहीं

५५. सायन प्रायश्चित्तं शृङ्गा विहितं पुनः ।
उपाध्यायिका प्रायः सम्पन्ना २५५ ५१ ३३५

३.० बलपत्रिकाभाषिणी दुर्गादे कथं १.० पुत्रा कर्त

पांशुः कतुर्दुर्गः नः महारुद्रमः नः
पुनः पयःपुनः पांशुः रक्षः पांशुः शिशुः शिशुः ॥

३० कर्तव्यनुराग अध्यायः अध्यायः संस्कृतः

नमो भगवते वासुदेवाय गणेशाय नमः वासुदेवाय नमः

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥

३८ कतिपय प्रमाण मीमांसायाम्
कर्मणि ३८ मा एवम देवान धर्म समा एत ३

॥ ३८ ॥ एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३
तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३

॥ ३९ ॥ एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३

॥ ४० ॥ एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३

॥ ४१ ॥ एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३
तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३

॥ ४२ ॥ एवम देवान धर्म समा एत ३
मन्त्राणां तन्मा एवम देवान धर्म समा एत ३

24. संविधान का महत्त्वपूर्ण अंग संविधान विभाग है।
संविधान विभाग ह का राष्ट्र व्यापक न

... ..

[illegible]

$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} \right) = \frac{1}{4}$

पद्य अष्टादशो वृत्तसम

6. 7. 8. 9. 10. 11.

$$1 \quad 2 \quad 3 \quad 4 \quad 5 \quad 6 \quad 7 \quad 8 \quad 9 \quad 10 \quad 11 \quad 12 \quad 13 \quad 14 \quad 15 \quad 16 \quad 17 \quad 18 \quad 19 \quad 20 \quad 21 \quad 22 \quad 23 \quad 24 \quad 25 \quad 26 \quad 27 \quad 28 \quad 29 \quad 30 \quad 31 \quad 32 \quad 33 \quad 34 \quad 35 \quad 36 \quad 37 \quad 38 \quad 39 \quad 40 \quad 41 \quad 42 \quad 43 \quad 44 \quad 45 \quad 46 \quad 47 \quad 48 \quad 49 \quad 50 \quad 51 \quad 52 \quad 53 \quad 54 \quad 55 \quad 56 \quad 57 \quad 58 \quad 59 \quad 60 \quad 61 \quad 62 \quad 63 \quad 64 \quad 65 \quad 66 \quad 67 \quad 68 \quad 69 \quad 70 \quad 71 \quad 72 \quad 73 \quad 74 \quad 75 \quad 76 \quad 77 \quad 78 \quad 79 \quad 80 \quad 81 \quad 82 \quad 83 \quad 84 \quad 85 \quad 86 \quad 87 \quad 88 \quad 89 \quad 90 \quad 91 \quad 92 \quad 93 \quad 94 \quad 95 \quad 96 \quad 97 \quad 98 \quad 99 \quad 100$$

1000

[illegible]

x	$\frac{1}{\sqrt{x}}$	$\frac{1}{x^2}$	$\frac{1}{x^3}$	$\frac{1}{x^4}$	$\frac{1}{x^5}$
-----	----------------------	-----------------	-----------------	-----------------	-----------------

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

[illegible]

*ਸ਼ਾਨੀ ਸਥਾਨ ਆਦਿ ਦੇ ਅੰਕ ੨ ੪ ੬ ੮ ੧੦ ੧੨ ੧੪ ੧੬ ੧੮ ੨੦ ੨੨ ੨੪ ੨੬ ੨੮ ੩੦ ੩੨ ੩੪ ੩੬ ੩੮ ੪੦ ੪੨ ੪੪ ੪੬ ੪੮ ੫੦ ੫੨ ੫੪ ੫੬ ੫੮ ੬੦ ੬੨ ੬੪ ੬੬ ੬੮ ੭੦ ੭੨ ੭੪ ੭੬ ੭੮ ੮੦ ੮੨ ੮੪ ੮੬ ੮੮ ੯੦ ੯੨ ੯੪ ੯੬ ੯੮ ੧੦੦

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| 1 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |

4. 124 5 125 6 126 7 127 8 128 9 129 10 130 11 131 12 132 13 133 14 134 15 135 16 136 17 137 18 138 19 139 20 140 21 141 22 142 23 143 24 144 25 145 26 146 27 147 28 148 29 149 30 150 31 151 32 152 33 153 34 154 35 155 36 156 37 157 38 158 39 159 40 160 41 161 42 162 43 163 44 164 45 165 46 166 47 167 48 168 49 169 50 170 51 171 52 172 53 173 54 174 55 175 56 176 57 177 58 178 59 179 60 180 61 181 62 182 63 183 64 184 65 185 66 186 67 187 68 188 69 189 70 190 71 191 72 192 73 193 74 194 75 195 76 196 77 197 78 198 79 199 80 200 81 201 82 202 83 203 84 204 85 205 86 206 87 207 88 208 89 209 90 210 91 211 92 212 93 213 94 214 95 215 96 216 97 217 98 218 99 219 100 220 101 221 102 222 103 223 104 224 105 225 106 226 107 227 108 228 109 229 110 230 111 231 112 232 113 233 114 234 115 235 116 236 117 237 118 238 119 239 120 240 121 241 122 242 123 243 124 244 125 245 126 246 127 247 128 248 129 249 130 250 131 251 132 252 133 253 134 254 135 255 136 256 137 257 138 258 139 259 140 260 141 261 142 262 143 263 144 264 145 265 146 266 147 267 148 268 149 269 150 270 151 271 152 272 153 273 154 274 155 275 156 276 157 277 158 278 159 279 160 280 161 281 162 282 163 283 164 284 165 285 166 286 167 287 168 288 169 289 170 290 171 291 172 292 173 293 174 294 175 295 176 296 177 297 178 298 179 299 180 300 181 301 182 302 183 303 184 304 185 305 186 306 187 307 188 308 189 309 190 310 191 311 192 312 193 313 194 314 195 315 196 316 197 317 198 318 199 319 200 320 201 321 202 322 203 323 204 324 205 325 206 326 207 327 208 328 209 329 210 330 211 331 212 332 213 333 214 334 215 335 216 336 217 337 218 338 219 339 220 340 221 341 222 342 223 343 224 344 225 345 226 346 227 347 228 348 229 349 230 350 231 351 232 352 233 353 234 354 235 355 236 356 237 357 238 358 239 359 240 360 241 361 242 362 243 363 244 364 245 365 246 366 247 367 248 368 249 369 250 370 251 371 252 372 253 373 254 374 255 375 256 376 257 377 258 378 259 379 260 380 261 381 262 382 263 383 264 384 265 385 266 386 267 387 268 388 269 389 270 390 271 391 272 392 273 393 274 394 275 395 276 396 277 397 278 398 279 399 280 400 281 401 282 402 283 403 284 404 285 405 286 406 287 407 288 408 289 409 290 410 291 411 292 412 293 413 294 414 295 415 296 416 297 417 298 418 299 419 300 420 301 421 302 422 303 423 304 424 305 425 306 426 307 427 308 428 309 429 310 430 311 431 312 432 313 433 314 434 315 435 316 436 317 437 318 438 319 439 320 440 321 441 322 442 323 443 324 444 325 445 326 446 327 447 328 448 329 449 330 450 331 451 332 452 333 453 334 454 335 455 336 456 337 457 338 458 339 459 340 460 341 461 342 462 343 463 344 464 345 465 346 466 347 467 348 468 349 469 350 470 351 471 352 472 353 473 354 474 355 475 356 476 357 477 358 478 359 479 360 480 361 481 362 482 363 483 364 484 365 485 366 486 367 487 368 488 369 489 370 490 371 491 372 492 373 493 374 494 375 495 376 496 377 497 378 498 379 499 380 500 381 501 382 502 383 503 384 504 385 505 386 506 387 507 388 508 389 509 390 510 391 511 392 512 393 513 394 514 395 515 396 516 397 517 398 518 399 519 400 520 401 521 402 522 403 523 404 524 405 525 406 526 407 527 408 528 409 529 410 530 411 531 412 532 413 533 414 534 415 535 416 536 417 537 418 538 419 539 420 540 421 541 422 542 423 543 424 544 425 545 426 546 427 547 428 548 429 549 430 550 431 551 432 552 433 553 434 554 435 555 436 556 437 557 438 558 439 559 440 560 441 561 442 562 443 563 444 564 445 565 446 566 447 567 448 568 449 569 450 570 451 571 452 572 453 573 454 574 455 575 456 576 457 577 458 578 459 579 460 580 461 581 462 582 463 583 464 584 465 585 466 586 467 587 468 588 469 589 470 590 471 591 472 592 473 593 474 594 475 595 476 596 477 597 478 598 479 599 480 600 481 601 482 602 483 603 484 604 485 605 486 606 487 607 488 608 489 609 490 610 491 611 492 612 493 613 494 614 495 615 496 616 497 617 498 618 499 619 500 620 501 621 502 622 503 623 504 624 505 625 506 626 507 627 508 628 509 629 510 630 511 631 512 632 513 633 514 634 515 635 516 636 517 637 518 638 519 639 520 640 521 641 522 642 523 643 524 644 525 645 526 646 527 647 528

भाग ११ क. बहिन-पं

100% 5.4 3

ॐ ह्रीं क्लीं वरुणाय नमः
ॐ सायं सायं नमः
ॐ मन्त्राय नमः

[illegible]

20. हा भी प्रचण्डादि नमः । यः स पञ्जी कर्तुः
 21. पुनरादि पुनः त्रितय प्रचण्डं नयामस्मिन्
 मयानन्दकः त्रितय नमः नमः

३५ श्री श्री चण्डिकादेवी मठ : पं० सं पूजा कर्तों

१०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५) १०० (५५)

३५ श्री श्री सारस्वतीनामिकाई नमः यं० से पूजा करें ।
 ॥ ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ इत्युक्तं विधत्ता इत्येतन्मन्त्रा भाग्यद्वारा
 भाग्यन नृपदीनामिका भाग्यनं कर्तव्यं कर्तव्यं पूजा नैव प्रतीयते
 ॥ ॥

३६ पा मिन्दुमिति शब्दात् स हवण्य सादृश्यात् ।
कान्तिकल्पवनाशाय नमामि सर्णिहनाधिकार्य ॥

३० ह्रीं श्रीं वाग्देव्याय नमः पं. स. पु. का. क.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३० त्रैलोक्य वाग्देव्याय नमः वाग्देव्याय नमः विजयधर
धर्मार्थदायक नमो नित्यं यं कदाचन भव

३० ह्रीं श्रीं वाग्देव्याय नमः पं. स. पु. का. क.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३० मुनि विद्वान् गणेशाय नमः गणेशाय नमः
या पद्म पद्म हस्तं धारयन्ती नमो नमः ॥

३० ह्रीं श्रीं वाग्देव्याय नमः पं. स. पु. का. क.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३० वाग्देव्याय नमः वाग्देव्याय नमः
विजयधर नमो नित्यं नमः नमः

३० ह्रीं श्रीं वाग्देव्याय नमः पं. स. पु. का. क.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५५. धृतिर्वाग्दृष्ट्यागता दृष्टवत्

२. श्री १० नमः श्रीगुरुदेव्यै नमः श्रीगुरुदेव्यै नमः श्रीगुरुदेव्यै नमः

| | | | | |
|-----|---------------|------------------|----------------|--------|
| नाम | इच्छा रखे नाम | की भावना रखे नाम | संख्या रखे नाम | संख्या |
|-----|---------------|------------------|----------------|--------|

ਨਮ ਭਗਵੰਤੇ ਸਤ ਨਾਮੁ ਭਗਵੰਤਾਏ ਨਮ ਭਗਵੰਤਾਏ ਸਾ

१७. १७.०१.०२ १७.०१.०२ १७.०१.०२ १७.०१.०२ १७.०१.०२

॥ अथ कर्त्तव्यं ॥ अथ कर्त्तव्यं ॥ अथ कर्त्तव्यं ॥ अथ कर्त्तव्यं ॥

ਕੁਝਾਈ ਸਮ ਤੁਝਾਈ ਸਮ ਤਿਆਰੀ ਸਮ ਤਾਕੀਪਈ ਸਮ

भाषाही नष्ट राज्याची नष्ट भाषाही नष्ट राज्याची नष्ट

५२१-५२५: ३४५ ५२५-५२९: ३४५ ५२९-५३३: ३४५ ५३३-५३७: ३४५

असमानीई नमः पानीयानी नमः पीनकानी नमः पाहकानी

जन्म १९४५ ई. १२/१२/४५, म. प्र. १९४५ ई. १२/१२/४५, म. प्र. १९४५ ई. १२/१२/४५

Journal of Management Education 30(6)p.789-804

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

Figure 10

अथवा ३५ अहिर्निर्वृणयन् सुहृत्स्वीकृत्यासी दग्धम्
 अग्रेषां सिद्धयश्चेष्ट धर्मयोग्यं तस्मात्सु ॥
 ३६ धर्माय नमः इत्येतत् प्रमाणम् ॥ ३७ ॥

ग्रामणा चक्रं नृ दिव्यान्वयाऽस्मि दिव्यापाणी सदा स्थित
दिव्यहस्तविद्यता निरुं सदाज्ञानं यमांस्तु ते ।
३६ हाकरी यम । कर्तव्यं यदांस्तु म पुत्रं वा

प्रश्न ३०. प्राचीनतम सभ्यताया गुरुतम विधायात
प्राचीनतमया सभ्यताया गुरुतम विधायात
३१. प्राचीनतमया सभ्यताया गुरुतम विधायात

प्रश्न-३५) यदि $\sin A = \frac{3}{5}$ तो $\cos A = ?$

५१७-४ ३० मिश्रसुखमहापात्र पत्रादिवादिमुद्रित
 थाप मा मर्षनां रक्त यावत् पाण्डुराभयते
 ३० वासपान्नाय नमः । क. ४३ ज्ञानभास्व. ११. ४. ३

७।२८-३१ ३० पण्डितः सागकपायि विदुषो ब्रूयात्
प्राप्तां दम्पतीं निन्द्य सागपाला नष्टान्ते
उ० अंकुरैर्नमः क० ५० दक्षिणतः च गतः क०

७७/५) अंकशास्त्रं नमस्कृत्य गङ्गाया निषम्य स्नानं
लाभकानां सर्वकल्याणं त्रिदश पात्रैर्वाक्यम् ॥
ॐ शंकराय नमः कलकत्ता गङ्गा नदी ५ ५ ५

अथ नवमी पूजनम्

१॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
२॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
३॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कृष्णाय नमः ॥ १० ॥

ज्ञानं यत्नं यत्नं यत्नं कृष्णाय नमः ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

४॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
५॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
६॥ ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
७॥ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ दशमी पूजनम्

१॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
२॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
४॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
६॥ ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ दशमी पूजनम्

१॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
२॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
४॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१० नवपत्रिकायै नमः स्वाहा ११ आर्तिस्वाम्यै नमः
 स्वाहा १२ चन्द्राय नमः स्वाहा १३ वाग्वाम्यै नमः स्वाहा
 १४ ब्रह्माय नमः स्वाहा १५ गुरुयै नमः स्वाहा १६ शुक्याय
 नमः स्वाहा १७ शिवेश्वर्याय नमः स्वाहा १८ गङ्गायै नमः
 स्वाहा १९ केनयै नमः स्वाहा २० दुर्गास्वाम्यै नमः
 स्वाहा २१ प्रमदस्वाम्यै नमः स्वाहा २२ कुम्भस्वाम्यै नमः
 स्वाहा २३ इन्द्रदेव्यै नमः स्वाहा

२४ श्रीगणेशाय नमः स्वाहा २५ गुरुदेव्यै नमः स्वाहा २६
 श्रीगणेशाय नमः स्वाहा २७ श्रीगणेशाय नमः स्वाहा २८ श्रीगणेशाय नमः स्वाहा

२९ मङ्गलं नमः श्रीगणेशाय मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं
 श्रीगणेशाय मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं
 श्रीगणेशाय नमः स्वाहा ३० मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं

३१ मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं
 मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं
 मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं मङ्गलं

होकर ही वह है जिसका है कि जिस के बिना ही कलकाल व युग
ही है और और पुनर्जा के बिना ही नहीं ही कलकाल आदि ।

॥ ५ ॥ नमस्ते देवि देवेहि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शक्तवत्सले ॥

श्रद्धा-प्राप्तना

भावान्न न जानामि न जानामि विमर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि हृदयतां परमेश्वरी ॥
घनहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी ।
यत्पूजितं यदा देवि परिपूर्णं तदस्मै मे ॥

विमर्जनम्

इयां पूजां यदा देवि यदाशक्त्योपपादितम् ।
रक्षां त्वं समादाय वज्रस्थानमनुत्तमम् ॥

यत्पूजितं यदा देवि तदाशक्त्योपपादितम् ।
रक्षां त्वं समादाय वज्रस्थानमनुत्तमम् ।
यत्पूजितं यदा देवि तदाशक्त्योपपादितम् ।
रक्षां त्वं समादाय वज्रस्थानमनुत्तमम् ।

ॐ उचिष्ठ देवि चागृहे शुभां पूजां प्रगृह्य च ।
कृत्वा मम कल्याणमष्टाधिः शक्तिधिः सह ॥
गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिका ।
यत्पूजितं यदा देवि परिपूर्णं तदस्मै मे ॥
वज्र त्वं श्रोतमि जले गृहे तिष्ठ विभूतये ।
सम्पत्सारव्यतीते तु पुनरागमनाय च ॥

३० दूरे दंडे प्रथमः अमृतं गच्छ कणिके ।
 इषां पूजां मया देवि पञ्चगवित्ति निवेदिताम् ॥
 तक्ष्णार्थं वाराहार्थं वृजस्य स्थापनमुत्तमम् ।
 मिहताहिनि आधुनिके पिनाकाया वल्लभे ॥
 गच्छ देवि महाभागे कल्याणं कुरु मे सदा ।
 गणाधिका कृता पूजा भक्त्या कमललोचने ॥
 गच्छन् देवता सर्वे दृष्ट्वा मे वार्योभितम् ।
 त्वं एता एवमेवैव सुखं सर्वत्र गयी मम ॥

वास्तव्यं तं गुह्यं देव अमृतं तं वाहिनि हाथ से राखी (हिले)
 है। कुरु भाग्य । आचार्य श्री ज्ञान ब्राह्मण को दक्षिणा दे । आचार्य
 गुह्यं समस्त को ज्ञान से वृजस्य को मन्त्रकः पर ज्ञान वृद्धि । आचार्य
 शिष्यक को पूजे ।

अभिषेक

गणाधिपीरकेशाधरासुतो इषो गुरुभार्तवसुख्यनन्दन ।
 गह्वर्य केतुश्च पर वचसहाः कुर्वन् च पूर्णमनोरथं भद्रा ॥
 उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो मुतासर्गविक्रमो भानुमन्मन्त्रचतुर्भुजः ।
 गन्धर्वयक्षोऽग्निसिद्धधारणाः कुर्वन् च पू० ॥ वायो दधीधिः
 सगा पुङ्गवता शक्रकुन्तलेयो धरती धनंजयः । रामप्रपः
 वैश्वक्सी युधिष्ठाः कुर्वन् च ० ॥ यन्मर्गसिधुर्गुदक्षनारदाः
 पराजरा व्यासवशिष्ठमार्गवाः । वाल्मीकिकुम्भोद्भवकर्गगीतमा
 कुर्वन् च ० । रथो शशी भववती च देवकी गौरी च
 लक्ष्मीश्च दिग्विजय रुक्मिणी । कूर्पो गजेन्द्रः सद्यराचरा इव

